B-2
L-14
Ancient India

बौद्ध धर्म

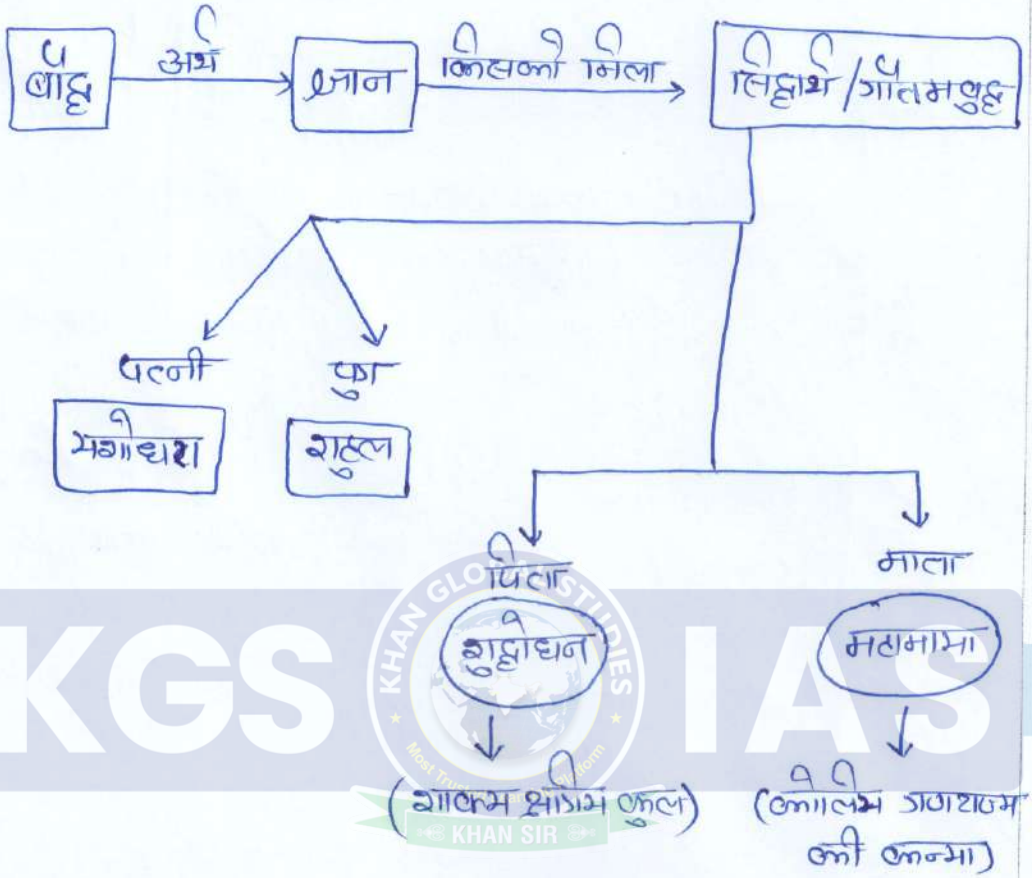

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

* बुद्ध के जन्म की कहानी : मज्झिम निकाय में
* लुम्बिनी में 563 ई. पू. सिद्धार्थ का जन्म हुआ। जन्म के कुछ दिनों के पश्चात इनकी माता की मृत्यु हो गई। इनका लालन-पालन इनकी मौसी प्रजापति गौतमी द्वारा किया गया। इन्हें महामाया गौतमी प्रजापति भी कहा जाता है।

* 16 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का यशोधरा से विवाह हुआ।
  - अन्य नाम
    - → बिम्बा
    - → गोपा
    - → भद्दकच्छना

* 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने गृह त्याग कर दिया यह घटना <u>महाभिनिष्क्रमण</u> कहलाती है।
  - ↓ यह अपने सारथी (चन्ना) और घोड़े (कन्थक) के साथ घर से निकले।
    - ↓ इन्होंने 4 दृश्य देखे : वृद्ध, रोगी, मृत शरीर और सन्यासी
  - → अजंता की गुफा नं. 17 में इस घटना का चित्रांकन

* गृह त्याग के पश्चात इन्होंने अनोमा नदी पार की और अनुपिय पहुंचे।
  - → यहीं पर उन्होंने अपने आभूषण एवं वस्त्र उतार कर अपने सारथी को दिये और काषाय वस्त्र धारण किये। 7 दिन तक यहां तपस्या की और फिर राजगृह आ गये। राजगृह में उन्होंने कुछ दिन तक <u>रुद्रक रामपुत्त अलारकलाम</u> से ध्यान सीखा।
    - ↓ भारत के प्राचीनतम सांख्य दर्शन के आचार्य

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* इसके पश्चात ये उरुवेला आते हैं और उनको 5 ब्राह्मण मिलते हैं और साथ में तपस्या आरंभ करते हैं।

* बाद में सिद्धार्थ गयाशीर्षपत्तनम् (सारनाथ) के मृगदाव पार्क में तपस्या प्रारंभ करते हैं। गया में वैशाख पूर्णिमा के दिन निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे इनको ज्ञान प्राप्त हुआ। जिसके बाद सिद्धार्थ बुद्ध कहलाए। ज्ञान प्राप्ती की इस घटना को निर्वाण कहा गया।

* गया को अब बोधगया तथा पीपल वृक्ष को बोधवृक्ष कहा गया।

* अब सिद्धार्थ ज्ञान प्राप्ति के पश्चात विभिन्न नामों से जाने गये।

- बुद्ध
- अर्हत
- बुद्ध शाक्य
- शाक्य मुनि
- तथागत

* बोधवृक्ष के चारों ओर अशोक द्वारा लकड़ी की रेलिंग लगवाई गयी, जिसे बोधिमण्ड कहा जाता है। बाद में शुंग शासकों ने इस लकड़ी की रेलिंग के स्थान पर पत्थर की रेलिंग लगवाई।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* इसी बोधिवृक्ष की डाली को लेकर अशोक के पुत्र महेन्द्र अपनी बहन संघमित्रा के साथ श्रीलंका के शासक तिस्स के दरबार में गये तथा तिस्स को अशोक का पत्र भी भेंट किया। इस पत्र में लिखा था कि "मैं तथागत का शिष्य बन गया हूं।"

* बुद्ध को जो ज्ञान मिला उसका सार है- प्रतीत्यसमुत्पाद अर्थात जो जैसा प्रतीत होता है वैसा ही उत्पन्न होगा। कहने का तात्पर्य है कि प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होगा। इसे ही सापेक्षवाद कहा जाता है।

कार्य ⇌ कारणवाद

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES

* बुद्ध को जब ज्ञान प्राप्त हुआ तब उन्होंने सर्वप्रथम दो बंजारो (भल्लिक व तपस्सु) को अपना ज्ञान प्रदान किया।

* बुद्ध ने सर्वप्रथम अपना उपदेश 5 ब्राह्मणों को सारनाथ में दिया, जिसे धर्मचक्रप्रवर्तन कहा गया। इसका प्रतीक चक्र है।

* बुद्ध द्वारा 5 ब्राह्मणों को 4 आर्य सत्य का उपदेश दिया गया।

⇓

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध
4. दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा

* 4 आर्य सत्य की व्याख्या

⇓

यह संसार दुःख से भरा हुआ है। इस दुःख का कारण इच्छा है, जो कि अज्ञानता से उत्पन्न होती है। अतः इस अज्ञानता को समाप्त करने के लिए बुद्ध ने 8 मार्ग बताये, जिसे अष्टांगिक मार्ग कहा गया।

* अष्टांगिक मार्ग

→ सम्यक दृष्टि
→ सम्यक संकल्प
→ सम्यक वाक्
→ सम्यक कर्मांत
→ सम्यक आजीव
→ सम्यक व्यायाम
→ सम्यक स्मृति
→ सम्यक समाधि

इन अष्टांगिक मार्गों को ही प्रतीत्यसमुत्पाद है तथा इसे मध्यम प्रतिपदा / मध्यम मार्ग / मिडिल प्रतिपदा कहा जाता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR